# सर्वार्थचिन्तामणिः

*– प्रभा सारस्वत*

यहां मैं सर्वार्थचिन्तामणिः के अनुसार सूर्यादि ग्रहों के सप्तमेश होने के शुभाशुभ फलों को प्रस्तुत कर रही हूं।

## शुभ फल

1. सप्तमेश होकर सूर्य यदि बली हो शुभयुक्त हो शुभ राशि नवांश में हो या शुभ दृष्ट हो और लग्नेश का मित्र हो तो स्त्री पतिभक्त बहुत अनुकूल होती है।

2. सप्तमेश होकर चन्द्रमा या शुक्र शुभ नवांश, शुभ राशि, उच्चगत मित्र क्षेत्री शुभ षष्टयांश में हो तो पुण्यवती सुशील व सच्चरित्र पत्नी होती है।

3. यदि मंगल सप्तमेश होकर मित्रक्षेत्री, उच्चगत, शुभवर्ग गत, शुभदृष्ट पारवतांशादि अंशों में हो तो क्रूर होती हुई भी पति के अनुकूल आचरण करने वाली होती है।

4. शुभ बुध से पुत्रवती, सुखदायिनी पतिव्रता होती है।

5. सप्तमेश होकर गुरु शुभ स्थिति में हो, स्वराशिस्थ हो तो स्त्री सुंदर, निष्ठावान, संपत्तिवान, बुद्धिमान, पति का साथ देने वाली होती है।

6. यही शुक्र यदि बली शुभयुक्त, शुभनवांश, मित्रक्षेत्री, या उच्चगत या इन्हीं वर्गों में स्वगृही, शुभ षष्टयांशगत हो तो स्त्री बातूनी लेकिन पुत्रवती व गुणवती होती है।

7. यदि शनि सप्तमेश बलवान होकर किसी शुभग्रह से दृष्ट युक्त हो विशेषतया गुरू से दृष्ट युक्त हो तो परोपकारी करने वाली, साधुओं, ब्राह्मणों, देवताओं की भक्त, धर्मशीला तथा सुशीला होती है।

## अशुभ फल

1. सप्तमेश होकर सूर्य यदि पाप राशि या नवांश में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो पत्नी प्रायः उग्र प्रतिकूल स्वभाव वाली क्रूर होती है।

2. सप्तमेश होकर चन्द्रमा यदि पापयुक्त, पापदृष्ट, पाप मध्यगत या पाप नवांश में हो तो स्त्री कुमार्ग पर चलने वाली और बड़े अपराध की प्रवृति वाली होती है।

3. मंगल यदि सप्तमेश होकर निर्बल क्रूर षष्टयांशगत, नीच शत्रुक्षेत्री हो तो पति से दुर्व्यवहार करने वाली कम स्नेह वाली होती है।

4. बुध यदि सप्तमेश होकर नीचगत, अस्त पापमध्य में पापदृष्ट हो तो प्रतिकूल स्त्री होती है। यही बुध यदि 6,8,12 भावों में चला जाय तो पति घातिनी होती है।

5. सप्तमेश गुरु का अशुभ फल कहीं स्पष्ट नहीं किया है। कुछ शास्त्रों में स्त्री के वातरोगी होने की बात कही है।

6. यदि शुक्र सप्तमेश होकर पापयुक्त, नीचगत, अस्त नीचग्रह से युक्त क्रूर षष्टयांश आदि में गया हो तो वेश्या की तरह आचरण करने वाली, कठोर स्वभाव व चोरी, दुराव छिपाव करने वाली होती है।

7. यदि सप्तमेश शनि पापयुक्त नीचादि नवांश या राशि में शत्रु से, पापदृष्ट पाप ग्रह के नवांश में हो तो कुलदूषणा शिथिल चरित्र वाली व दुष्ट होती है।

*****